इकाई 12 पर्यावरण आंदोलन को दिशा प्रदान करने में संयुक्त राष्ट्रसंघ, गैर–सरकारी संगठनों आदि की भूमिका*

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 पर्यावरण – ऐतिहासिकता, महत्व और मानव अंतःक्रिया

12.3 सिविल सोसाइटी (एन.जी.ओ.) और पर्यावरण आंदोलन

12.4 अंतर्राष्ट्रीय संगठन के रूप में संयुक्त राष्ट्रसंघ – संयुक्त राष्ट्रसंघ पर्यावरण कार्यक्रम (यू.एन.ई.पी.)

12.5 ग्रीनपीस आंदोलन

12.6 भारत में गैर–सरकारी संगठन और पर्यावरण आंदोलन

12.7 सारांश

12.8 शब्दावली

12.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

12.10 संदर्भ ग्रंथ

---

* डॉ. प्रदीप कुमार, सहायक प्राध्यापक, विस्तार और विकास अध्ययन विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली।

12.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप जानेंगे:

- पर्यावरण और मानव अंतःक्रिया की चेतना और जागरूकता के संबंध में,
- पर्यावरण के संबंध में नागरिक समाज (एनजीओ) की अवधारणा, संरचना और कार्य के बारे में; तथा
- अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर पर्यावरण से संबंधित सिविल सोसाइटी की सफलता की कहानियों के बारे में।

12.1 प्रस्तावना

इसके पहले के अध्यायों में आपने पर्यावरण के इतिहास के बारे में पढ़ा। यहां, आप जानेंगे कि 20वीं शताब्दी में विशेष रूप से विश्व युद्ध के बाद पर्यावरणीय प्रक्षेपवक्र और चेतना कैसे विकसित हुई। विश्व युद्ध के बाद विस्तारीत उपभोक्तावाद और नई वैश्विक अर्थव्यवस्था की वजह स पर्यावरण किसी भी राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक एजेंडे का प्रमुख हिस्सा रहा है। आप देखेंगे कि किस प्रकार विभिन्न स्तरों पर पारिस्थितिकी या पर्यावरण की सुरक्षा के लिए नागरिक समाज का उदय हुआ। इस दिशा में छोटे–छोटे स्तर पर किए जा रहे प्रयासों से लेकर संयुक्त राष्ट्र और दुनिया भर के अन्य अंतरराष्ट्रीय गैर–लाभकारी संगठनों द्वारा किए जा रहे प्रयासों के बारे में बताया गया है।

12.2 पर्यावरण – ऐतिहासिकता, महत्व और मानव अंतःक्रिया

पर्यावरण संबंधी इतिहास, मानव के इतिहास और प्रकृति के साथ उनके अंतःक्रिया को संदर्भित करता है। पर्यावरण को आरंभ से ही विज्ञान अथवा धर्म से जोड़कर देखा गया तथा इसकी महत्ता के बारे में सभी को पता था। यह हमारी दैनिक जीवन शैली से दृढ़ता से जुड़ा हुआ है जो जीवों, वनस्पतियों और पारिस्थितिक तंत्र से निकटता से जुड़ा हुआ है। पर्यावरण का महत्व समग्र रूप से प्रकृति पर निर्भरता के साथ विकसित हुआ है, जिसने जैविक–अजैविक के बीच एक सहजीवी संबंध स्थापित किया है। पर्यावरण इतिहास के अधिकांश साहित्य को तीन महत्वपूर्ण क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया हैः

1) प्रकृति की अवधारणा एवं समय और स्थान के साथ इसकी गतिशीलता;

2) प्रकृति एवं जीव–जंतुओं , वनस्पतियों तथा पारिस्थितिक तंत्र के साथ इसके अंतःक्रिया पर इनके परिवर्तनों का प्रभाव, मनुष्यों और उनके परिवेश यानी भूमि, जल, वातावरण और जीवमंडल पर प्रभाव

3) सबसे महत्वपूर्ण पहलू प्रकृति के बारे में लोगों की धारणा या सोच है, जिसमें उनके दृष्टिकोण, विश्वास और मूल्य शामिल हैं।

ये न केवल विशाल पर्यावरण इतिहास बल्कि जनसांख्यिकीय संक्रमण, उत्पादन के साधन, तकनीकी परिवर्तन के साथ–साथ उत्पादन और उपभोग प्रक्रियाओं का व्यापक आवृत्त क्षेत्र (कवरेज) हैं। पारिस्थितिकी तंत्र के सभी घटकों के बीच इस संबंध को निम्नलिखित ग्राफ द्वारा दर्शाया जा सकता हैः

Graph-1

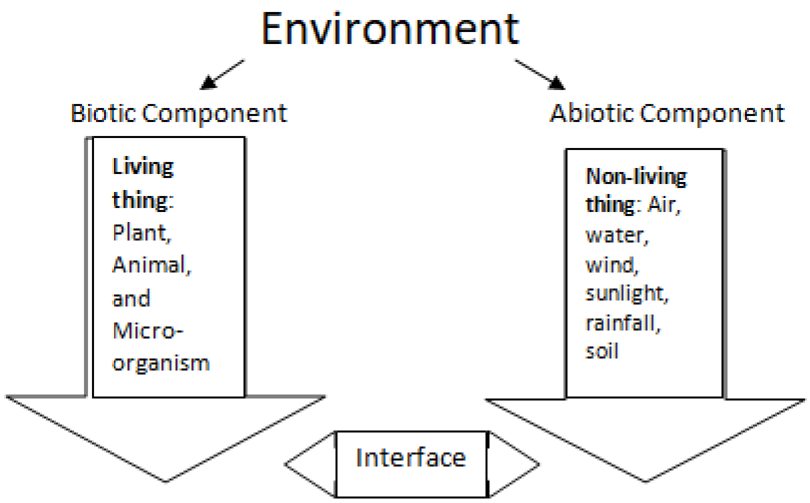

ग्राफ – 1

वातावरण

जैविक घटक अजैविक घटक

जीवित पदार्थ अजीवित पदार्थ

पौधे, जानवर एवं सूक्ष्म जीवाणु हवा, जल , सूर्य की रौशनी, वर्षा, भूमि

अंतःक्रिया

अब हम मनुष्यों और पर्यावरण के बीच पारस्परिक क्रिया के साथ–साथ पारिस्थितिकी तंत्र पर इसके परिणामों को देखेंगे। मोटे तौर पर, इस बातचीत को तीन महत्वपूर्ण श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

(क) पहली अंतःक्रिया – हस्तक्षेप या संशोधन

यहां हम प्राकृतिक वातावरण में हस्तक्षेप या संशोधन के रूप में मानव क्रिया को देखेंगे जैसे बांधों, पुलों और अन्य भवनों का निर्माण आदि। इन परस्पर अंतःक्रियाओं का सकारात्मक और नकारात्मक दोनों परिणाम हुआ। प्लास्टिक और रसायनों का अनेक प्रकार से उपयोग ने पारिस्थिकी को परिवर्तित कर दिया। प्लास्टिक उत्पादों का बढ़ता उपयोग, कृषि में उर्वरक और कीटनाशक दवाओं के प्रयोग से पर्यावरण पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है।

(ख) दूसरी अंतःक्रिया – अनुकूलन

इसमें हम मनुष्य को अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए पर्यावरण के साथ अनुकूलन करते हुए देखेंगे। मानव और पर्यावरण के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध को सकारात्मक अंतरफलक के रूप में देखा गया ह।

(ग) तीसरी अंतःक्रिया – पर्यावरण पर निर्भरता

मनुष्य अपनी जरूरतों मसलन भोजन, लकड़ी, पानी और कई अन्य संसाधनों के लिए पर्यावरण पर निर्भर है।

इसलिए, पर्यावरण के सभी घटकों/हितधारकों का अंतःक्रिया आपस में जुड़ा हुआ है और एक दूसरे को प्रभावित करता है।

12.2.1 सिविल सोसाइटी : संरचना और कार्य

राज्य और लाभ संस्थानों के विपरीत सिविल सोसाइटी में संघात्मक संस्थानों के बड़े– बड़े क्षेत्र शामिल हैं मसलन, ट्रस्ट, फाउंडेशन, गैर–सरकारी विकास संगठन (एनजीडीओ), ट्रेड यूनियन, स्वयं सहायता समूह और 'तीसरे' सेक्टर क तहत अन्य संरचनाएं शामिल हैं। पहले और दूसरे क्षेत्रों, अर्थात् सरकार और कॉर्पोरेट की विफलता के बाद, सिविल सोसाइटी ने सामाजिक जिम्मेदारी, राष्ट्र निर्माण और अन्य विकास प्रक्रिया की चिंता की तथा इसको दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इस क्षेत्र म पिछले चार दशकों में देश के भीतर और वैश्विक स्तर पर बहुत तेजी से विकास हुआ है। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने अपने 52 वें सत्र में वर्ष 2001 को स्वयंसेवकों के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष (IYV) के रूप में घोषित किया। अंतर्राष्ट्रीय स्वयं सेवक वर्ष की उद्घोषणा अतीत में स्वयंसेवकों और स्वयंसेवी संगठनों के महत्वपूर्ण योगदान और उपलब्धियों को पहचानने तथा उनकी गतिविधियों के गैर–सरकारी क्षेत्रों में किए जा रहे उत्कृष्ट कार्य को बढ़ावा देने के लिए थी।

विश्व बैंक ने सिविल सोसाइटी को एक "गैर–सरकारी और गैर लाभकारी संस्था की श्रृंखला के रूप में देखा, न कि लाभकारी संगठनों के रूप में। सिविल सोसाइटी सार्वजनिक जीवन में मौजूद हैं तथा नैतिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक, धार्मिक एवं परोपकारी विचारों के आधार पर अपने सदस्यों और अन्य लोगों के हितों और मूल्यों को अक्षुण्ण रखने की दिशा में प्रयासरत हैं। सिविल सोसाइटी संगठन, संगठनों की एक विस्तृत श्रृंखला है जिसमें शामिल हैः सामुदायिक समूह, गैर सरकारी संगठन, श्रमिक संघ, स्वदेशी

समूह, धर्मार्थ संगठन, विश्वास–आधारित संगठन, पेशेवर संघ और उनकी बुनियाद"।

सिविल सोसाइटी की अवधारणा में निम्नलिखित विशिष्ट संगठन व संस्थान शामिल हैं :

1) संघ का उद्देश्य अल्पकालिक होता है तथा यह औपचारिक या अनौपचारिक हो सकता है।

2) संगठन किसी समूह के औपचारिक संगठित प्रयास को दर्शाता है।

संगठन और संस्था के बीच बड़ा ही मामूली अंतर है जिसकी वजह से इन्हें अक्सर एक दूसरे के स्थान पर उपयोग किया जाता है। जब कोई संगठन नियमित रूप से लोगों की भलाई के कार्य में लगा रहता है तो इसे समाज के लोगों की सामूहिक स्वीकृति प्राप्त होती है। इस प्रकार यह समाज क लिए मूल्यवान आधार बनकर एक संस्था के रूप में परिणत हो जाता है।

संरचना

सिविल सोसाइटी की संरचना के बारे में जानने से पहले हमें इसकी मूल प्रकृति के बारे में स्पष्टता होनी चाहिए। इसकी शाखाएँ छोटे–छोटे गाँवों के जमीनी स्तर के संगठन से लेकर विश्व भर में फैली हुई हैं, में बड़े बदलाव के साथ कल्पना की जाती है। नागरिक समाज की संरचना और प्रकार भी कई मानदंडों के साथ भिन्न होते हैं:

क) अनौपचारिक तथा औपचारिक

ख)	पंजीकृत और अपंजीकृत,

ग)	बाहरी निधियों पर निर्भरता – राज्य निधि/कॉर्पोरेट निधि।

औपचारिक पंजीकरण के तहत भारत में पांच कानूनी विकल्प हैं:

1)	सोसायटी अधिनियम (1860),

2)	सहकारी समिति अधिनियम (1912),

3)	ट्रेड यूनियन अधिनियम (1926),

4)	गैर–लाभकारी गतिविधियों के लिए कंपनी अधिनियम, धारा 25 (1956), और

5)	इंडियन ट्रस्ट एक्ट (1982)।

अधिकांश पुस्तकों में दो प्रमुख प्रकार के संघों और गैर–लाभकारी संगठनों का उल्लेख मिलता है:

1)	सामाजिक प्रभाव

2)	अभिव्यंजक/भावबोधक प्रभाव

सामाजिक प्रभाव प्रकार के संघ वे हैं जिन्हें रुचि या दबाव समूहों के रूप में कार्य करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। वे राज्य और नागरिकों के बीच मध्यस्थ संस्था के रूप में कार्य करते हैं। जबकि अभिव्यंजक/भावबोधक प्रकार

प्राथमिक समूहों के विकल्प के रूप में अपने सदस्यों की भावनात्मक जरूरतों को पूरा करता है। (रोज़, 1954)।

स्वैच्छिक संघों के वर्गीकरण के लिए स्मिथ और फ्रीडमैन ने विभिन्न आधारों का उपयोग किया हैः

1) आकार

2) आंतरिक राजनीतिक संरचना

3) बाहरी नियंत्रण पर निर्भरता या स्वतंत्रता

4) सामाजिक कार्य

5) उनके समर्थन का स्रोत

6) स्थान / स्थिति

7) वर्ग / श्रेणी और उनके सदस्य की विशेषताएं

8) सदस्यों के बीच घनिष्ठता

9) प्रोत्साहन – सामग्री, एकजुटता या उद्देश्यपूर्ण

10) लाभार्थी – सदस्य, ग्राहक, जनता या मालिक

बेल एंड फोर्स (1956: 360) ने स्वैच्छिक संघों को वर्गीकृत करने के अपने संरचनात्मक–कार्यात्मक दृष्टिकोण को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया है :

1) सामान्य हित संघ,

2) विशिष्ट स्तरीय हित संघ, और

3) विशिष्ट व्यक्तिगत संघ।

एम.ए. मुत्तलिब (1987) ने भारतीय परिदृश्य में स्वैच्छिकता के स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पांच प्रकार के स्वैच्छिक संघों की पहचान की है :

1) पारस्परिक सहायता,

2) परोपकारी,

3) धार्मिक,

4) सरकारी, और

5) व्यापार संघ

कार्य

इसके कार्यों का दायरा वृहत है तथा छोटी–छोटी स्थानीय आवश्यकताओं से लेकर बड़ी–बड़ी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के आयोजन हेतु इन्हें स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली है। तदनुसार, इसकी भूमिका और कार्य निर्धारित होते हैं। यहां संरचनात्मक और कार्यात्मक दृष्टिकोणों का अलग–अलग उल्लेख किया गया है किन्तु दोनों हैं एक ही। किसी भी सामाजिक संस्था का विश्लेषण और परीक्षण में सामाजिक विज्ञान के स्थापित सिद्धांतों की अहम भूमिका होती है।

रैडक्लिफ ब्राउन और मालिनोवस्की ने इस सिद्धांत के संरचनात्मक–कार्यात्मक दृष्टिकोण वाले आदिम सामाजिक संस्थानों के संबंध में विश्लेषण किया है। इनकी सोच है कि अधिकांश सामाजिक तत्व/संरचनाएं किसी न किसी उद्देश्य/कार्य के साथ उभरती हैं। रोज ने भी समाज के प्रति उनके कार्यों के आधार पर दो प्रकार के संघों का विश्लेषण किया है – सामाजिक प्रभाव प्रकार और अभिव्यंजक/भावबोधक प्रकार (ऊपर वर्णित)

समय और स्थान के साथ सिविल सोसाइटी के कार्यों की प्रकृति भी बदलती रहती है। भारतीय समाज में दान, कल्याण और स्वयंसेवी संस्थाओं का लंबा इतिहास है जिसे अक्सर "पारंपरिक स्वयंसेवी संस्था" कहा जाता है। 1980 के दशक के बाद पिछले चार दशकों में सिविल सोसाइटी के कार्य करने का ढंग पारंपरिक स्वयंसेवा के साथ–साथ आधुनिक स्वयंसेवा की ओर विकसित हुआ है। वैश्वीकरण और विश्व आर्थिक एकीकरण ने भी आधुनिक स्वयंसेवा को दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पारंपरिक और आधुनिक स्वयंसेवा के बीच महत्वपूर्ण अंतर है। जहां पारंपरिक स्वयंसेवा की विशेषता दान, नीति और नैतिक मूल्य आदि हैं वहीं आधुनिक स्वयंसेवा को सक्रियतावाद और अधिकार–आधारित दृष्टिकोण के लिए जाना जाता है। इसलिए, भारतीय समाज में पारंपरिक स्वैच्छिकता के प्रभुत्व के कारण आधुनिक सिविल सोसाइटी की आवश्यकता पहले कभी महसूस नहीं हुई जितनी आज है। हालाँकि, पहले पश्चिमी यूरोपीय देशों और अमेरिकी समाज में सिविल सोसाइटी के बारे में चर्चा, विमर्श होते रहते थे। भारत सहित अन्य विकासशील देशों में यह बाद में आया।

सिविल सोसाइटी के कुशल कामकाज के लिए अब वित्त पोषण और संसाधन समर्थन को सबसे महत्वपूर्ण घटक माना जाता है। आज, वित्त पोषण ने न केवल आधुनिक सिविल सोसाइटी की संख्या में बल्कि इसके कार्य को प्रकृति और दायरा को भी बढ़ाया है। परंपरागत स्वयंसेवा में वित्त संसाधन चिंता का विषय नहीं था। दूसरे, सिविल सोसाइटी गैर–लाभकारी उपक्रमों से लेकर लाभकारी सामाजिक उद्यम बनने तक लोगों का विश्वास जीतने व अपनी वैधता के लिए सरकारी संस्थानों का समर्थन प्राप्त करने के लिए नित नई भूमिकाएँ निभाने के लिए सहर्ष तैयार है। वैश्वीकरण के बाद कॉर्पोरेट संगठनों और उसकी अनुषंगी चैरिटी विंग के साथ बेहतर ताल–मेल दिखाई दी है।

ग्राफ–II

सिविल सोसाइटी के प्रमुख कार्यात्मक क्षेत्र

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

12.3 सिविल सोसाइटी (एन.जी.ओ.) और पर्यावरण आंदोलन

विश्व युद्ध के बाद दुनिया ने संघर्ष और विनाश के दुष्परिणामों का सामना किया है जिसने सभी को शांतिपूर्ण मानदंडों का पालन करने और संघर्ष समाधान के लिए काम करने के लिए एक संस्था विकसित करने के लिए मजबूर किया। स्वैच्छिक समझौते से इस तरह के संघर्ष और विनाश को रोकने के लिए विश्व स्तरीय संघ का विकास हुआ। इसे संयुक्त राष्ट्रसंघ (यूएनओ) कहा जाता है। यहां हम अध्ययन करेंगे कि कैसे संयुक्त राष्ट्रसंघ और अन्य

विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने सिविल सोसाइटी के लिए अन्य महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाईं। ये भूमिकाएँ निम्नवत हैं।

1) सीधे कार्यक्रमों को लागू करना,

2) एजेंसियों के साथ सहयोग करना,

3) बहुमूल्य अनुसंधान सहायता,

4) नीति निर्माण,

5) हिमायत/पक्ष समर्थन, और

6) सबसे महत्वपूर्ण, एक फंडिंग एजेंसी के रूप में।

12.4 अंतर्राष्ट्रीय संगठन के रूप में संयुक्त राष्ट्रसंघ – संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यू.एन.ई.पी.)

आंतरिक शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए संयुक्त राष्ट्र एक महत्वपूर्ण अंतर–सरकारी संगठन है। इसने राष्ट्रों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध विकसित किए हैं और संघर्ष के मुद्दों को दूर कर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का वातावरण बनाने का काम किया है। विश्व युद्ध के बाद दुनिया ने गंभीर संकट और सामाजिक–राजनीतिक अशांति देखी। इन समस्याओं को दूर करना और अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा की ओर बढ़ना इस संगठन का प्रमुख मिशन था।

इसकी स्थापना 02 अक्टूबर, 1945 को 51 सदस्य देशों के साथ हुई थी और आज यह बढ़कर 193 देशों का प्रतिनिधित्व कर रही है। इसके अलावा हम अन्य देशों को भी इसकी सदस्यता ग्रहण करते विशिष्ट आवश्यकताओं के लिए इसकी विभिन्न शाखाओं को भी खुलते हुए देखते हैं। 1919 मे संयुक्त राष्ट्र के समक्ष स्थापित अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) सहित संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निगरानी और मान्यता प्राप्त लगभग 61 संगठन हैं। इनमें से 16 संगठन संयुक्त राष्ट्र द्वारा इसकी स्थापना के बाद स्थापित किए गए हैं।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) पर्यावरण संरक्षण के लिए 1972 में स्थापित एक ऐसा अंतरराष्ट्रीय संगठन है जिसका मुख्यालय नैरोबी (केन्या) में स्थित है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम निम्नलिखित मुद्दों पर केंद्रित है।

1) वायु,

2) जल,

3) जैव सुरक्षा,

4) शहर और जीवन शैली,

5) रसायन और अपशिष्ट,

6) जलवायु परिवर्तन की रोकथाम संबंधी कार्रवाई ,

7) आपदा और संघर्ष,

8) पारिस्थितिकी तंत्र और जैव विविधता,

9) शिक्षा और पर्यावरण,

10) ऊर्जा,

11) निष्कर्षण / अर्क,

12) समीक्षाधीन पर्यावरण,

13) पर्यावरण अधिकार और शासन,

14) वन,

15) लिंग और पर्यावरण संबंधी मुद्दे,

16) हरित अर्थव्यवस्था,

17) महासागर और समुद्र,

18) संसाधन दक्षता,

19) प्रौद्योगिकी,

20) परिवहन, और

21) सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी)

इन सभी के विशिष्ट क्षेत्रों पर केन्द्रीत कर गहनता से निगरानी की जाती है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) तदनुसार संबंधित देश को अपनी पारिस्थितिकी के लिए आने वाले खतरों से लड़ने और कम करने की सलाह देता है। यह लगभग 50 वर्षों से ग्रह और मानव स्वास्थ्य की भी वकालत कर रहा है और कार्बन उत्सर्जन और संसाधन विकास की भूख के कारण दुनिया को होने वाले नुकसान को समझने में मदद करने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करता है। इसने इस क्षति को कम करने संबंधी नीतियों और कार्यों का समर्थन किया है। इस ग्रह ने कोविड –19 जैसे वैश्विक महामारी की पीड़ा को

झेला है तथा पूरा मानव समाज इस आपदा से बाहर निकलने में एकजुटता का मिसाल कायम किया है। इसके कारण हमारी अर्थव्यवस्थाएं पिछले 30 वर्षों में सबसे गहरी मंदी का सामना कर रही हैं।

यह महामारी दुनिया को 2030 एसडीजी के वादे को हासिल करने से दूर कर रही है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने इन मुद्दों को एजेंडे में सबसे ऊपर रखा और कहा कि मानवता को प्रकृति के साथ न्याय करते हुए साम्यता बनाए रखनी चाहिए अन्यथा प्रकृति प्रदत्त कोविड जैसी घातक महामारी जैसी अन्य आपदाओं का सामना करने के लिए तैयार रहना पड़ेगा। प्रकृति के साथ सद्भाव और शांति बनाए रखने के क्रम में हमें प्राकृतिक संसाधनों के दोहन से बचना पड़ेगा तथा अपनी जीवन पद्धति में सुधार लाना आवश्यक है। समाज में बेतहासा बढ़ता कचड़ा संग्रह पर्यावरणीय प्रभाव जैसे हरित महामारी की नींव रख रहा है।

संयुक्त राष्ट्र के अलावा कई अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठन पर्यावरण की सुरक्षा के लिए नागरिक समाज संगठनों के रूप में कड़ी मेहनत कर रहे हैं, मसलन :

क) सरकारी संगठन

ख) उद्योग आधारित गैर–सरकारी संगठन/गैर लाभदायी संगठन।

इनमें पहला संगठन क्षेत्रीय राजनीतिक और आर्थिक उद्देश्यों के लिए विकसित हुई जबकि वैश्विक मुद्दे जैसे गरीबी, खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य आदि दोनों संगठनों के एक समान उद्देश्य हैं। ये दोनों प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पर्यावरणीय पहलुओं पर केंद्रित हैं।

क) सरकारी संगठनों में शामिल हैं:

- यूरोपीय आर्थिक समुदाय (ईईसी)
- संयुक्त राष्ट्र का खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ)
- आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी)
- यूरोप के लिए संयुक्त राष्ट्र आर्थिक आयोग (ईसीई)
- संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन (यूएनआईडीओ)
- विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ)

ख) उद्योग आधारित गैर–सरकारी संगठनों में शामिल हैं:

- अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य लाभ ब्यूरो (ब्यूरो इंटरनेशनल डे ला रिक्यूपरेशन (बीआईआर)/ब्यूरो ऑफ इंटेरनेशनल रिसाइकलिंग
- उद्योग सलाहकार समितिः ओईसीडी (बीआईएसी)
- इंटरनेशनल चैंबर ऑफ कॉमर्स (आईसीसी)
- अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण ब्यूरो (आईईबी)
- यूनियन ऑफ़ इंडस्ट्रियल एंड एम्प्लॉई कन्फेडरेशन ऑफ़ यूरोप

(ग) तीसरी श्रेणी जो उद्योग की विशेष शाखा के लिए संगठनों का गठन करती है। इसमें शामिल है:

- लुगदी, कागज और बोर्ड उद्योग का यूरोपीय परिसंघ (सीईपीएसी)
- यूरोपियन काउंसिल ऑफ केमिकल मैन्युफैक्चरर्स फेडरेशन (CEFIC)

- कृषि–रासायनिक उत्पादों के निर्माताओं के राष्ट्रीय संघ का अंतर्राष्ट्रीय समूह (GIFAP)
- अंतर्राष्ट्रीय पेट्रोलियम उद्योग पर्यावरण संरक्षण संघ (IPIECA)
- अंतर्राष्ट्रीय लौह और इस्पात संस्थान (IISI)
- अंतरराष्ट्रीय प्राथमिक एल्यूमिनियम संस्थान (आईपीएआई)
- लीड डेवलपमेंट एसोसिएशन (LDA)
- वायल कंपनी यूरोपियन ऑर्गनाइजेशन फॉर एनवायरनमेंटल एंड हेल्थ प्रोटेक्शन कॉन्केव (CONCAWE)

12.5 ग्रीनपीस आंदोलन

हरित शांति आंदोलन (ग्रीन पीस मूवमेंट) वैश्विक पर्यावरण आंदोलन के लिए महत्वपूर्ण सफलता की कहानियों में से एक है, जिसे शुरू में कनाडा में लोगों के एक छोटे समूह द्वारा विकसित किया गया था। हरा– भरा वातावरण बनाए रखने के लिए विश्व के लोगों द्वारा शांतिपर्ण कार्रवाई की एकतावादी चर्च का भी समर्थन प्राप्त था। 1971 में कनाडा में शुरू हुई दुनिया की सबसे बड़ी पर्यावरणीय गतिविधि के निर्माण में संचार मीडिया ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जो दुनिया भर में फैल गई और पर्यावरण आंदोलन के लिए एक प्रमुख शक्ति बन गई। ग्रीनपीस आंदोलन का मूल उद्देश्य किसी भी बल का उपयोग किए बिना कार्य करना या विरोध करना था। वे हर उस जगह पर जाते हैं जहां की गतिविधियां उन्हें पर्यावरण के लिए हानिकारक लगता है। वे वेल्स और वेलिंग जहाजों के बीच खुद के नाव को तैनात कर उन्हें पर्यावरण के विरुद्ध किए जा रहे कुत्सित कार्यों का विरोध करते हैं तथा उन्हें ऐसा करने से

रोकते हैं। ग्रीनपीस एक प्रचार संगठन है जो निम्नलिखित लोकप्रिय अभियानों का आयोजन करता है:

(क) महासागरों और समुद्री लुप्तप्राय समुद्री प्रजातियों का संरक्षण:

1970 के दशक में हरित शांति आंदोलन समुद्र और समुद्री जीवों की रक्षा यानी अमचिटका द्वीप, अलास्का (कनाडा) में 3000 से अधिक लुप्तप्राय समुद्री प्रजातियों को बचाने के अभियान के साथ शुरू हुआ। लोगों के एक छोटे समूह ने भूमिगत परमाणु परीक्षण स्थल का दौरा किया और उनके शांतिपूर्ण विरोध ने इस परियोजना को रोक दिया। जैसा कि हम जानते हैं कि इस ग्रह के अस्तित्व के लिए महासागरों की महत्वपूर्ण भूमिका है। जीव जंतुओं का बहुत बड़ा हिस्सा, सूक्ष्म प्लवक (पानी के ऊपर तैरते जीव) से लेकर सबसे बड़ी नस्ल की व्हेल मछली तक, महासागरों की देन है। पूरी पृथ्वी के लिए आवश्यक ऑक्सीजन का आधा हिस्सा समुद्र से प्राप्त होता है। एक ओर जहां समुद्री जीव जंतुओं का दोहन करने के लिए प्रयुक्त नवीनतम जहाजों और उपकरणों से समुद्र के जीव जंतुओं को भारी खतरा है वहीं जीवाश्म ईंधन को जलाने तथा समुद्र में रसायनों व औद्योगिक कचड़ा के डंपिंग से प्राकृतिक संतुलन बनाए रखना मुश्किल हो रहा है। महासागरों के अंधाधुंध दोहन से समुद्र में मृत क्षेत्र (ऑक्सीज़न के अभाव में जहां जीव जन्तु नहीं विकसित होते) का विस्तार , अत्यधिक मछली पकड़ने से इसके स्टॉक में कमी तथा व्हेल की संख्या में कमी भो देखी जा रही है। ग्रीनपीस आंदोलन ने महासागर को बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

(ख) परमाणु खतरे को समाप्त करना

परमाणु खतरा जुलाई 1945 में शुरू हुआ जब अमेरिका ने अलामोगोर्डो (न्यू मैक्सिको) के पास अपने पहले परमाणु बम का परीक्षण किया और कुछ साल बाद 1951 में परमाणु बम बनाकर उसने दावा किया कि यह शांति स्थापित करने की दिशा में किया गया कार्य है। हालांकि, परमाणु ऊर्जा का उपयोग कभी भी शांतिपूर्ण नहीं रहा तथा यह हमेशा से प्रकृति के लिए विनाशकारी ही सिद्ध हुआ है। जैसा कि हम विगत आधी सदी से भी अधिक समय से देख रहे हैं, यह ग्रह विशाल परमाणु कचरे से अटा पड़ा है जिससे हजारों वर्षों तक रेडियोधर्मी किरणें निकलती रहेंगी । इस विकिरण ने न केवल पर्यावरण के लिए खतरा पैदा किया है, बल्कि भूमि, नदियों और महासागरों को भी प्रदूषित किया, जिससे विश्व भर में कैंसर और अन्य बीमारियां फैलीं। ग्रीन पीस परमाणु ऊर्जा पुनर्संसाधन के लिए अभियान चला रही है और अपने प्रारंभिक प्रयास में उसने अमेरिकी परमाणु हथियारों के परीक्षण पर रोक लगाने की कोशिश की। तब से यह लगातार परमाणु हथियारों का विरोध करता रहा है लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वे परमाणु हथियारों के निर्माण को पूरी तरह से रोक पाने में सफल हो गए हैं। शीत युद्ध के दौरान परमाणु आयुध का भंडार बढ़कर 70,000 हो गए और उनमें से हजार से अधिक अल्प सूचना पर प्रक्षेपण के लिए तैयार थे। हालांकि, शीत युद्ध के बाद इसकी संख्या कम होकर 13,000 रह गई है।

(ग) प्राचीन वनों का संरक्षण

विश्व में विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक प्राचीन वन हैं जिनमें शामिल हैं:

1) समशीतोष्ण वन,

2) उष्णकटिबंधीय वन,

3) शंकुधारी वन, और

4) वर्षा वन।

(घ) हमारे पारिस्थितिकी तंत्र में इन वनों की कई भूमिकाएँ हैं जैसेः

1) वातावरण में ऑक्सीजन के अनुपात को संतुलित करना,

2) वर्षा और वाष्पीकरण को नियंत्रित करना,

3) मिट्टी के कटाव की रोकथाम,

4) भोजन, जड़ी–बूटियों और आजीविका की जरूरतों के पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराना।

प्राचीन जंगल लाखों वनवासियों और जानवरों का आश्रय स्थल है तथा ये अपनी भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार की जरूरतों के लिए जंगलों पर पूरी तरह से निर्भर हैं। ये जंगल दुनिया की सबसे अच्छी प्रजातियों के पौधों, जानवरों और जीव–जंतुओं के लगभग दो तिहाई के घर भी हैं। प्राचीन जंगलों की लकड़ियों को काटकर, शहतीरें बनाकर अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बेचने तथा जंगलों के लगातार अतिक्रमण से अमेज़ॅन वर्षावन और अफ्रीका का कैमरून वर्षावन जैसे बड़े जंगल कम हो रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप पारिस्थितिकी तंत्र में भारी बदलाव देखने को मिल रहा है। जंगलों के नष्ट होने का महत्वपूर्ण कारक अंतरराष्ट्रीय बाजार में सस्ते लकड़ी की मांग है जिस वजह से विश्व के जंगलों की अंधाधून्ध कटाई जारी है। ग्रीन पीस ने दुनिया

भर में पर्यावरण और वन प्रबंधन के साथ–साथ विश्व समाज के सेहत व सुरक्षा के प्रति जागरूक देशों व सामाजिक संस्थानों को लगातार प्रेरित करने का काम किया है।

घ) जहरीले रसायनों का जखीरा खत्म करनाः

हमारे पर्यावरण में जहरीले रसायनों से न केवल नदियों और झीलों बल्कि वायु, भूमि और महासागरों की गुणवत्ता को भी खतरा ह। हम कई सिंथेटिक रसायनों और उत्पादों के उत्पादन में लगे हुए हैं जिन्हें अब मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए वैश्विक खतरे के रूप में देखा जा रहा है। विश्व का रासायनिक उद्योग बिना किसी परीक्षण और पर्यावरण पर इसके प्रभाव को समझे हर साल हजारों प्रकार के रासायनिक यौगिकों का उत्पादन और और इसके अपशिष्ट को नदियों में बहाने का कार्य निर्बाध रूप से कर रहा है। 2019 में यह बताया गया था कि दुनिया भर में 53.6 मिलियन टन बिजली या इलेक्ट्रॉनिक उपकरण अपशिष्ट यानी ई–कचरा उत्पन्न होता है और हर साल इसमें 2 मिलियन टन और जुड़ जाता है। अकेले भारत में हर साल लगभग 00.146 मिलियन टन ई–कचरा पैदा होता है। रीसाइक्लिंग/निपटान प्रक्रिया की कमी के कारण विकासशील और अविकसित देशों के लिए यह सबसे बड़ा खतरा है। हम लगातार प्रदूषण फैलाने वाले पदार्थों के संपर्क में हैं। इसके अलावा, विद्युत और इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों के लिए वैश्विक बाजार में वृद्धि से पर्यावरण के प्रदूषण में तेजी आ रही है। ग्रीनपीस संस्था उपभोक्ता उत्पादों, घर के आस–पास की गंदगियों और धूल आदि तथा वर्षा जल में भी मानव निर्मित खतरनाक रसायनों के दुष्प्रभाव के बारे में जागरूकता फैलाने का काम करता है। इसका कार्य

अंतरराष्ट्रीय समुदाय को खतरनाक रसायनों और अन्य जहरीले घटकों को प्रतिस्थापित करने के प्रति संवेदनशील बनाना है। इन खतरों को रोकने के लिए, यूरोपीय संघ, जापान, दक्षिण कोरिया और संयुक्त राज्य अमेरिका के राज्यों ने पहले ही जहरीले रसायनों के उपयोग को समाप्त करने के लिए कानून पेश किए हैं।

ई) आनुवंशिक इंजीनियरिंग (अभियंत्रण) के खिलाफ अभियानः

आणविक जीव विज्ञान के क्षेत्र में वैज्ञानिक विकास से प्रकृति के बारे में हमारी समझ को बढ़ाने और नए चिकित्सा उपकरण उपलब्ध कराने की काफी संभावनाएं हैं। इसका उपयोग व्यावसायिक लाभ के लिए पर्यावरण को वृहत आनुवंशिक परीक्षण में बदलने के लिए भी किया जाता है। विश्व की खाद्य आपूर्ति की जैव विविधता और पर्यावरणीय अखंडता हमारे अस्तित्व के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। जेनेटिक इंजीनियरिंग वैज्ञानिका को ऐसे जीनोम में हेरफेर करके पौधों, जानवरों और सूक्ष्मजीवों को बनाने में सक्षम बनाती है जो प्राकृतिक रूप से नहीं होते हैं। इन्हें आनुवंशिक रूप से संशोधित जीव कहा जाता है। यह भविष्य की पीढ़ियों को एक अनियंत्रित आनुवंशिक विकास की ओर ले जाता है जो निम्नलिखित कारणों से हानिकारक हैः

1) आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों को एक बार व्यावसायिक हित के लिए पर्यावरण में छोड़े जाने के बाद वापस नहीं बुलाया जा सकता है,

2) जनता को आनुवंशिक इंजीनियरिंग और खाद्य श्रृंखला में होने वाली इसकी जटिलताओं क बारे में जानने के अधिकार से वंचित किया जाता है, और

इस प्रकार, एक तरफ हम कृषि उत्पादन और कॉर्पोरेट हित का समर्थन करते हैं, लेकिन दूसरी ओर भविष्य में पर्यावरण पर उनके परिणाम के संदर्भ में हमारे कार्य कलाप बेफिक्र और अप्रत्याशित हैं तथा हम नवीनतम जैव सुरक्षा प्रोटोकॉल के अनुपालन में फिसड्डी सिद्ध हो रहे हैं।

च) सुरक्षित और टिकाऊ व्यापार की दिशा में प्रयासः

हरित शांति आंदोलन कभी भी विकास और व्यापार के खिलाफ नहीं था, बल्कि इसने प्राकृतिक संसाधनों के इष्टतम और सतत उपयोग का सुझाव दिया। हालांकि, व्यापार का उद्देश्य प्रकृति को नुकसान पहुंचाए बिना लाभ कमाना होना चाहिए जो अक्सर उपरोक्त समस्याओं में गुणात्मक वृद्धि का कारण बनता है। इसलिए, इस आंदोलन ने बिना किसी बाधा के पर्यावरण में न्यूनतम हस्तक्षेप कर प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग पर ध्यान केंद्रित किया है।

ग्रीन पीस एक लोकप्रिय गैर–सरकारी पर्यावरण संगठन है जो 40 से अधिक देशों में सक्रिय है और एम्स्टर्डम, (नीदरलैंड) में इसका एक प्रभावी अंतरराष्ट्रीय समन्वय मुख्यालय है। इसका नारा "पृथ्वी की सभी विविधता में जीवन का पोषण करने की क्षमता सुनिश्चित करने" पर जोर देता है। यह दुनिया भर में निम्नलिखित प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दों के साथ काम करता है :

1) समुद्री जीव– जंतुओं की रक्षा करना,

2) परमाणु प्रसार का विरोध,

3) वैश्विक तापमान (ग्लोबल वार्मिंग), पुराने जंगलों की कटाई, वाणिज्यिक स्तर पर व्हेल का शिकार और जरूरत से ज्यादा मछली पकड़ने जैसे मुद्दों का समाधान करना आदि।

यह पर्यावरण की रक्षा के क्रम में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रत्यक्ष कार्रवाई, पैरवी (पक्ष दृजुटाव अभियान) और अनुसंधान का उपयोग करता है। इसका वित्त पोषण और वित्तीय सहायता वास्तव में स्वैच्छिक है तथा यह बिना किसी राज्य और कॉर्पोरेट के समर्थन के कार्य करता है। ग्रीनपीस के पहले और बाद में भी ऐसे कई अन्य अंतरराष्ट्रीय पर्यावरणीय गतिविधियों उल्लेख मिलता है जो कम लोकप्रिय हुए। इनके बारे में भी जानना जरूरी है :

1) वन्यजीव संरक्षण सोसायटी, यूएसए (1895),

2) फॉना एंड फ्लोरा इंटरनेशनल कैम्ब्रिज (1903),

3) राष्ट्रीय ऐतिहासिक डेनिश संगठन (1911),

4) वेटलैंड्स इंटरनेशनल, नीदरलैंड (1937),

5) पर्यावरण रक्षा कोष, यूएसए (1967),

6) यातायात संरक्षण कार्यक्रम (1976),

7) विश्व संसाधन संस्थान, यूएसए (1982),

8) रेनफॉरेस्ट एलायंस, यूएसए (1987),

9) सतत ऊर्जा के लिए अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क, डेनमार्क (1992),

10) ग्रीन क्रॉस इंटरनेशनल, जिनेवा (1993),

11) अर्थ चार्टर पहल (2000),

12) पर्यावरण का समाज, इंग्लैंड (2004),

13) जलवायु वास्तविकता परियोजना, वाशिंगटन (2006),

14) प्रोजेक्ट ग्रीन वर्ल्ड इंटरनेशनल, ओमान (2012)।

12.6 भारत में गैर–सरकारी संगठन और पर्यावरण आंदोलन

भारत में सामाजिक और पर्यावरणीय आंदोलनों की लंबी ऐतिहासिक जड़ें हैं। पर्यावरण हमारी संस्कृति में निहित है क्योंकि हम प्रकृति के प्रत्येक जीवित और निर्जीव चीजों में देवताओं के अस्तित्व को मानते हैं। "कुलदेवता" की अवधारणा आदिम समुदायों में अच्छी तरह से ज्ञात "सामाजिक तथ्य" है और तदनुसार इसका पालन किया जाता है। भारत ने "वसुधैव कुटुम्बकम" सिद्धांत का पालन किया। इसका मतलब है कि पूरी पृथ्वी एक परिवार है जिसमें जैविक और गैर–जैविक दोनों प्राणी शामिल हैं। इस संबंध में पर्यावरण संरक्षण/प्रकृति संरक्षण के लिए विभिन्न स्वैच्छिक प्रयासों का हमारा एक लंबा इतिहास रहा है। इस संबंध में कुछ लोकप्रिय सफलता की कहानियां हैं:

बिश्नोई आंदोलन

यह प्रसिद्ध और सही मायने में स्वैच्छिक पर्यावरण आंदोलन 1730 में जमेश्वर पंथ (या बिश्नोई संप्रदाय) के अनुयायियों जमेश्वरपंथियों द्वारा शुरू किया गया था। अमृता देवी बिश्नोई ने मारवाड़ क्षेत्र (जोधपुर जिले) के अपने गांव खेजराली में राजा के आदमियों को पेड़ काटने से रोक दिया। वनों की कटाई

के खिलाफ इस प्रारंभिक प्रतिरोध के परिणामस्वरूप उसका सिर काट दिया गया और पेड़ों की रक्षा करने की कोशिश में 300 से अधिक लोग मारे गए। इन लोगों को लोकप्रिय रूप से बिश्नोई संप्रदाय के नाम से जाना जाता है जो प्रकृति उपासक होते हैं। इनका आंदोलन पूरी तरह से अहिंसक था। बिस्नोई आंदोलन ने चिपको और अप्पिको जैसे आगे के आंदोलनों के अग्रदूत के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

चिपको आंदोलन

उत्तराखंड (हिमालयी क्षेत्र) के चमोली जिले में 1973 में वनों की कटाई के खिलाफ पेड़ों की सुरक्षा के लिए यह एक महत्वपूर्ण एवं अनूठा आंदालन था। बिश्नोई आंदोलन की तरह इसका भी उस क्षेत्र की महिलाओं ने नेतृत्व किया, जिन्होंने ग्रामीणों द्वारा पेड़ों की अवैध कटाई का कड़ा विरोध किया। दो करिश्माई नेताओं ने इस आंदोलन का नेतृत्व कियाः सुंदरलाल बहुगुणा और चंडी प्रसाद भट्ट। उन्होंने इस सिविल संस्था आंदोलन को गति प्रदान की।

साइलेंट वैली मूवमेंट

साइलेंट वैली केरल के पलक्कड़ जिले में एक सदाबहार उष्णकटिबंधीय जंगल है। जंगल और उनके निवासियों की रक्षा के लिए यह आंदोलन 1973 में स्थानीय समुदायों, स्थानीय गैर सरकारी संगठनों और प्रख्यात पर्यावरणविदों द्वारा कुंतीपुझा नदी पर कुंतीपुझा जलविद्युत बांध के निर्माण के लिए सरकार की मंजूरी के खिलाफ शुरू किया गया था, जो साइलेंट वैली सदाबहार जंगल

से होकर गुजरता है। इस परियोजना के व्यापक प्रभावों का आकलन निम्नवत किया गया है:

1) वन आवरण का नुकसान,

2) वनवासियों का विस्थापन,

3) वन्य जीवों की किस्मों का नुकसान, और

4) 8.3 वर्ग किलोमीटर का नम सदाबहार जंगल का जलमग्न होना।

अप्पिको आंदोलन

1983 में दक्षिण भारत के उत्तर कन्नड़ जिले के सलकानी गांव के लोगों द्वारा किया यह आंदोलन साइलेंट वैली आंदोलन के बाद का एक प्रसिद्ध आंदोलन था। कन्नड़ भाषा में अप्पिको का अर्थ है पेड़ों को गले लगाना। यह वन संरक्षण आंदोलन कर्नाटक और केरल के पहाड़ी जिलों में प्लाईवुड कारखानों, लुगदी और पेपर मिलों के लिए तथा बांध निर्माण, रेल और सड़क मार्ग जैसी विभिन्न विकास परियोजनाओं के कारण पेड़ों की कटाई के खिलाफ केंद्रित है। स्थानीय लोगों ने देखा कि 1950 में जहां वन क्षेत्र 80 प्रतिशत हुआ करता था यह 30 वर्षों के भीतर केवल 25 प्रतिशत रह गया है। इस आंदोलन का नेतृत्व पर्यावरणविद् पांडुरंगा हेगड़े ने किया था। उन्हें इस क्षेत्र में वनों की कटाई से 30 मिलियन से अधिक लोगों के प्रतिकूल रूप से प्रभावित होने का बहुत दुख है।

नर्मदा बचाओ आंदोलन

यह मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात से बहने वाली एकमात्र पश्चिम की ओर बहने वाली नदी नर्मदा पर विशाल जलविद्युत बांध निर्माण के खिलाफ आंदोलन था। इस बांध के निर्माण के खिलाफ 1985 से विभिन्न स्तरों पर विरोध प्रदर्शन जारी है। इस आंदोलन से जुड़े हैं :

1) स्थानीय रूप से प्रभावित जनजातीय समूह,

2) एनजीओ,

3) पर्यावरण कार्यकर्ता जैसे मेधा पाटकर, बाबा आमटे आदि।

उनके अलावा, कई अंतरराष्ट्रीय गैर सरकारी संगठन इस आंदोलन के लिए समर्थन और संसाधन प्रदान कर रहे हैं। एक लंबी कानूनी लड़ाई ने उच्च्च वृद्धि वाले जलविद्युत बांधों के दुष्प्रभावों को उजागर करते हुए बताया गया है कि इसके निर्माण से निम्नलिखित समस्याएँ उत्पन्न होंगी।

1) उपजाऊ भूमि के बड़े भूभाग का जलमग्न होना,

2) लोगों का विस्थापन,

3) जैव विविधता में गड़बड़ी आदि।

टिहरी बांध संघर्ष

टिहरी हाइड्रो पावर कॉर्पोरेशन ने उत्तराखंड (पहले उत्तर प्रदेश के तहत) में टिहरी के हिमालयी तलहटी शहर में गंगा की मुख्य सहायक भागीरथी नदी पर एक बांध बनाने की योजना बनाई। इस बांध निर्माण के विरोध में सन

1986–1990 के दौरान टिहरी गढ़वाल के स्थानीय लोगों ने एक संघर्ष समिति बनाई तथा सरकार के समक्ष अपना आक्रोश दर्ज कराया। विरोध के बावजूद योजना बांध निर्माण की योजना को आगे बढ़ाते हुए कहा गया कि यह दुनिया का चौथा सबसे बड़ा बांध होगा तथा इस क्षेत्र के लोगों में खुशहाली आएगी। लेकिन संघर्ष समिति ने सरकार के प्रस्ताव को अस्वीकार कर अपना संघर्ष जारी रखा। बाद में सरकार ने आमरण अनशन पर बैठे सुंदरलाल बहुगुणा और उनके दल को आश्वासन दिया कि बांध का निर्माण नहीं होगा और उनसे अनशन समाप्त करने का अनुरोध किया। संघर्ष समिति के सदस्यों ने अनशन तोड़ दिये किन्तु सरकार ने बांध निर्माण से पारिस्थितिकी को होने वाले नुकसान की परवाह किए बगैर उस क्षेत्र में विकास की गतिविधियां जारी रही तथा बांध का निर्माण रुका नहीं। वैज्ञानिकों ने सलाह दी कि टिहरी का उच्च भूकंप प्रवण क्षेत्र बांध के लिए खतरनाक है और इससे लाखों लोगों (5 लाख से अधिक) को जान से हाथ धोने पड़ सकते हैं। इसके अलावा स्थानीय लोगों की सोच है कि भागीरथी हिमालयी संस्कृति में पवित्र नदी है, तथा नदी को बांधना इसकी पवित्रता का अपमान करना होगा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक लंबी परंपरा का इतिहास और प्रयास है। इन उल्लिखित सिविल संस्थाओं की पहल के अलावा भी उस क्षेत्र में पयावरण बचाव के लिए कई छोटे– छोटे आंदोलन हुए जो असंगठित थे तथा जिसका उल्लेख नहीं हुआ।

बोध प्रश्न

1) पर्यावरण संरक्षण, संरक्षण और बहाली की दिशा में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका और महत्व पर चर्चा करें।

....

....

....

....

....

....

2) ग्रीनपीस आंदोलन पर प्रकाश डालिए।

....

....

....

....

....

....

3) निम्नलिखित वाक्यों में बताएं कौन सा सत्य है और कौन सा गलत है:

(क) अप्पिको आंदोलन बिश्नोई और चिपको जैसे आंदोलनों का अग्रदूत था। ( )

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

(ख) चिपको आंदोलन वर्तमान उत्तराखंड के चमोली जिले में था। ( )

(ग) साइलेंट वैली आंदोलन कुंतीपुझा नदी पर बांध के निर्माण के खिलाफ था। ( )

(घ) कन्नड़ में अप्पिको का अर्थ है पेड़ों को काटना। ( )

(च) टिहरी बांध की योजना गंगा की भागीरथी की सहायक नदी पर बनाई गई थी और इसे दुनिया का चौथा सबसे बड़ा बांध बनाने की योजना थी। ( )

12.7 सारांश

इस इकाई में हमने पर्यावरण की गतिविज्ञान, इसके महत्वपूर्ण घटकों और पारस्परिक अंतःक्रियाओं के बारे में पढ़ा। प्रकृति के जैविक और अजैविक घटकों के बीच निर्भरता को जानने के लिए इन अंतःक्रियाओं को समझना महत्वपूर्ण है। दुनिया भर में पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों में बड़ी संख्या में एनजीओ, एनपीओ और स्वयंसेवी संस्थाएं लगी हुई हैं जो विभिन्न प्रकार के कार्यों मसलन पक्ष समर्थन और जागरूकता अभियान, नीति निर्माण, अनुसंधान समर्थन, स्वैच्छिक भागीदारी, राज्य और कॉर्पोरेट एजेंसियों के खिलाफ विरोध आदि में लगे हैं।

ये पहल गांव से लकर अंतरराष्ट्रीय स्तर तक किए जा रहे हैं। 1945 में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्र विभिन्न उद्देश्यों मसलन पर्यावरण संरक्षण, शैक्षिक आवश्यकताएं, वैश्विक स्वास्थ्य मुद्दे, अंतर्राष्ट्रीय कानूनी समर्थन आदि के

लिए सबसे बड़े अंतर्राष्ट्रीय संघ के रूप में उभरा। इनके लिए इसने विभिन्न पार्श्व (Lateral) संगठनों को अपनी शाखाओं के रूप में विस्तारित किया। आपने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गैर सरकारी संगठनों की सफलता, इसकी भूमिका और महत्व के बारे में भी पढ़ा।

12.8 शब्दावली

टोटेम	:	एक पवित्र चीज जिसे व्यापक रूप से वैध किया गया है।
सामाजिक तथ्य	:	माइक्स्वेबर की धारणा जिसका अर्थ है समाज द्वारा वैध सामाजिक कार्य।
एनजीओ	:	गैर–सरकारी संगठन।
एनपीओ	:	गैर–लाभकारी संगठन।

12.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1) भाग 12.4 देखें।

2) भाग 12.5 देखें।

3) (क) सही (ख) गलत (ग) सही (घ) गलत (च) सही

12.8 संदर्भ ग्रंथ

Seth, D. L. and Sethi, H. (1991). *The NGO Sector in India: Historical Context and Current Discourse*.

Anheier, Helmut K. and Toepler, Stefan (2010). *International Encyclopaedia of Civil Society*. Springer, New York.

Smith, David H. (et al.) (2016) 'Typologies of Associations and Volunteering'. In *Research Handbook of Volunteering and Non-profit Associations*. Palgrave Macmillan, London.

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY